सर्प

भारतवर्ष के विषयुक्त सर्पों का वर्णन

तथा

उनके पहिचानने की विधि और इसके अतिरिक्त सर्पाघात पर उसकी व्यवस्था

150

यामापद बनरजी, एम० एस्-सी०
प्रयाग-विश्वविद्यालय, प्रयाग

१९३५

प्रस्तावना

भारतवर्ष में कोई भी ऐसी जगह न होगी जहाँ पर सर्प न पाये जाते हों। हिन्दू-शास्त्र के अनुसार इनकी उत्पत्ति अनन्त नाग से हुई है जिनके सहस्र मस्तक हैं तथा जो पाताल में रहते हैं। शास्त्रों में यह कहा जाता है कि कश्यप ऋषि की बहुत-सी स्त्रियाँ थीं उन्हीं में से एक कद्रु थीं जिनसे इन नागों की सृष्टि हुई। ये नाग पाताल में अपने राजा शेषनाग के साथ वास करते हैं जो कि हिन्दूशास्त्र के अनुसार इस भूमण्डल को अपने सहस्र मस्तक पर धारण किये हुए हैं। अभी तक हर एक हिन्दू-घर में नाग की पूजा नाना विधियों से मनाई जाती है।

पाश्चात्य लोगों का यह मत है कि बेसिलिस्क (Basilisk) अजगर या ड्रेगन (Dragon) सर्पों का राजा था—इस बेसिलिस्क के स्पर्श-मात्र ही से शरीर का मांस हड्डियों से अलग होकर गल गल कर गिर जाता था। इस बेसिलिस्क के नाम से लोग भयभीत होते थे। और दूसरे विद्वानों ने भी सर्प-जाति की उत्पत्ति के विषय में नाना प्रकार के कारण बताये हैं।

डारविन (Darwin) के Evolution theory (विकास-कल्पना) के अनुसार सर्प की उत्पत्ति एक प्रकार की छिपकलियों (Lizards) से हुई जिनके बहुत छोटे-छोटे पाँव थे और जो सहस्रों वर्ष पूर्व जंगलों में रहा करती थीं। ये छिपकलियाँ पृथ्वी पर रेंगती थीं। रेंगते रेंगते इनके छोटे छोटे पाँव किसी काम के न रहे और उनका शरीर भी लम्बा हो चला जिसके कारण उनके रेंगने में और भी सुविधा हुई। ये ही छिपकलियाँ lizard सर्प में परिवर्तित हो गईं।

सर्प के विष के बारे में बहुत-से बड़े बड़े वैज्ञानिकों ने अपने कठिन परिश्रम से बहुत कुछ काम किया है। इन महान् विद्वानों ने सर्प के विष में क्या क्या पदार्थ किस किस मात्रा में हैं यह सब कुछ निकाला है परन्तु अभी तक विषाक्त सर्पों के पहिचानने की विधियों के विषय में बहुत कम काम किया है। मेजर वाल (Major F. Wall) ने अपनी पुस्तक में इसके बारे में बहुत कुछ लिखा है।

जब सर्प किसी मनुष्य को काटता है तब उसकी व्यवस्था के लिए हम सबको पहले यह जानना आवश्यक है कि वास्तव में सर्प विषयुक्त है या नहीं। इसके जानने के पश्चात् हमको उसके विष के निवारण करने की विधि पर ध्यान देना चाहिए। मान लीजिए कि सर्प के विष को नाश करनेवाली वस्तु अंटीविनीन "Antevenene" हमारे पास है परन्तु हमको यह मालूम नहीं कि वास्तव में किसी विषाक्त सर्प ने काटा है अथवा किसी विषरहित सर्प ने चोट किया है और यह समझ कर किसी विषयुक्त सर्प ने काटा होगा हम उस मनुष्य को अन्टीविनीन Antevenene की एक खुराक देते हैं तो इसका परिणाम यह होगा कि मनुष्य के जीवित होते हुए भी उसकी मृत्यु की सम्भावना शीघ्र ही की जाय।

अधिकतर यह देखा गया है कि मनुष्य को कोई विषरहित सर्प चोट करता है और वह यह समझ कर कि किसी काले सर्प ने काटा है, इतना भयभीत हो जाता है कि उसकी मृत्यु केवल भय के कारण हो जाती है।

इसलिए अब हमको इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि किस तरह से हम एक विषयुक्त तथा विषरहित सर्प में क्या भेद है जान लें। इस पुस्तक के प्रथम भाग में मैंने भारतवर्ष के विषयुक्त सर्पों के पहिचानने की विधियाँ बताई हैं। दूसरे भाग में विष के सम्बन्ध में कुछ लिखा है और तीसरे भाग में सर्प-दंशन के पश्चात् विष-निवारण की व्यवस्था के विषय में लिखा है। इस पुस्तक के

लिखने में मैंने मेजर वाल तथा फेरर साहब की पुस्तकों से बहुत लाभ उठाया है और मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं अपने प्रोफ़ेसर दक्षिणारंजन भट्टाचार्य महाशय को उनकी सहायता तथा सहानुभूति के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।

—श्यामापद बनरजी

चित्र १

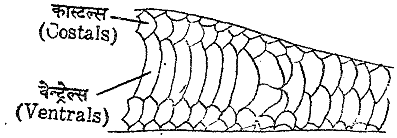

चित्र २

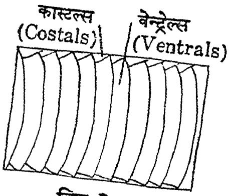

चित्र ३

चित्र ४

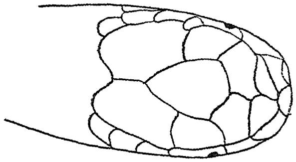

चित्र ५

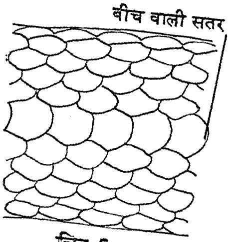

चित्र ६

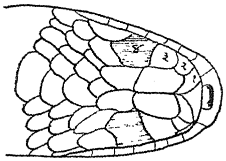

चित्र ७

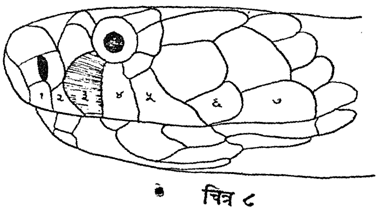

चित्र ८

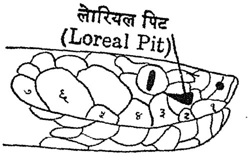

चित्र ९

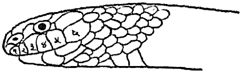

चित्र १०

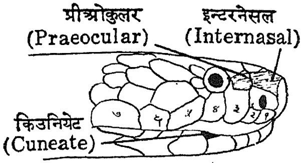

चित्र ११

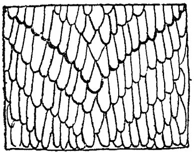

चित्र १२

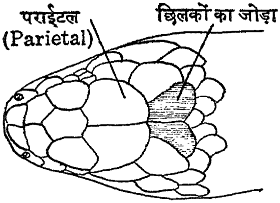

चित्र १३

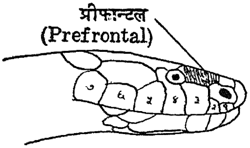

चित्र १४

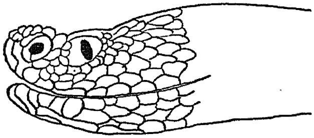

चित्र १५

चित्र १६

सर्प

प्रथम भाग

भारतवर्षीय सर्पों की पहचान

सर्प का वर्गीकरण तथा उनके पहिचानने की विधि

डार्विन की विकास-कल्पना (Evolution Theory) के अनुसार सर्प-समूह Reptiles श्रेणी में आते हैं—श्रीमान् बोलेन्जर Boulenger सर्प-समूह को Squamata Order के Ophidia Suborder में नियुक्त करते हैं—वे सर्पों को ९ समूहों (Families) में विभक्त करते हैं—परन्तु बहुत कम भेद होने के कारण उनका पहिचानना बहुत कठिन हो जाता है। वाल साहब का यह मत है कि यदि सर्प-समूह के ऊपरी भेदों को ही केवल देखा जाय तो उनकी जाँच हम लोग सरलता से कर सकते हैं तथापि Boulenger बोलेन्जर के वर्गीकरण (Classification) को न मान कर हम वाल साहब (Major Wall) के वर्गीकरण से अधिक लाभ उठा सकते हैं कारण हम ऊपर ही से यह पहिचान ले सकते हैं कि यह कौन-सा सर्प है।

वाल साहब का वर्गीकरण

पहला—ऐसी पूँछ हो जो दोनों तरफ़ से चपटी न हो अर्थात् गोल हो (चित्र नं० १)

इस तरह के विषरहित तथा विषयुक्त दोनों प्रकार के सर्प होते हैं।

Group A.

विषरहित सर्प—दो प्रकार के होते हैं

(१) वे सर्प जिनकी पीठ तथा पेट भर में खुरखुरे छिलके Scales हों। इस प्रकार के दो समूह (Families) होते हैं Typhlopidæ तथा Glyconidæ। इस प्रकार के सर्प अन्धे होते हैं और केचुये की तरह ज़मीन के अन्दर रहते हैं।

(२) वे सर्प जिनके पेट में ऐसे छिलके हों जिनको वेन्ट्रेल्स Ventrals कहते हैं। ये वेन्ट्रेल्स पेट के एक ओर से दूसरी ओर तक नहीं फैले रहते परन्तु इसके दोनों तरफ़ एक प्रकार के छोटे छिलके दिखलाई देते हैं जिनको Costals कोस्टेल्स कहते हैं। (चित्र नं० २)

ये सर्प विषरहित होते हैं—इस श्रेणी के अन्दर पाँच समूह (Families) हैं—Boidæ बोईडी, Ilysidæ इलाईसाइडी, Uropeltidæ यूरोपेल्टिडी, Xenopeltidæ ज़ीनोपेल्टिडी तथा Colubridæ (Subfamily Homalopsinæ)।

Group B.

विषरहित तथा विषयुक्त दोनों प्रकार के सर्प

वे सर्प जिनके पेट के छिलके एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ तक फैले रहते हैं जिसके कारण कोस्टल्स बिलकुल दिखलाई नहीं देते। (चित्र नं० ३)

इस प्रकार के ३ Families होते हैं—Colubridæ, Amblycephalidæ तथा Viperidæ—इनमें से Amblycephalidæ विषरहित सर्प-समूह है—Viperidæ विषयुक्त होते हैं और इनका विष बहुत भयानक होता है।

दूसरा—वे सर्प जिनकी पूँछ चपटी होती है (चित्र नं० ४)

इस सर्प-समूह में केवल जलनाग आते हैं।

Family Colubridæ-Subfamily Hydrophinæ—

ये जलनाग सर्वदा विषयुक्त होते हैं। इस वर्गीकरण-द्वारा हम सरलता से विषरहित तथा विषयुक्त सर्पों को पहिचान सकते हैं। केवल पेट के छिलके तथा पूँछ देख कर साधारणतः हम विषरहित तथा विषयुक्त सर्पों को पहिचान सकते हैं।

परन्तु वास्तव में विषयुक्त तथा विषरहित सर्पों को ठीक ठीक पहिचान कर उनको पृथक् करना एक बड़ी कठिन समस्या हो जाती है। प्रायः सब Viperine सर्प जो कि वाईपरिडी Viperidæ Family में हैं विषयुक्त हैं तथा Alcock ऐलकॉक और (Rogers) रोजर्स महाशय ने अपने कठिन परिश्रम के फल से यह अनुमान किया है कि प्रायः सब सर्पों के (जो कि कोलुब्रिडी Colubridæ Family में हैं) मुँह के अन्दर विष होता है। किसी के कम होता है और किसी के अधिक। Colubridæ Family कोलुब्रिडी फैमिली ३ विभागों में विभक्त की गई है।

(१) Aglypha जिनके विषदन्त नहीं हैं—

(२) Opisthoglypha—जिनके विषदन्त ऊपरी जबड़े की हड्डी (Maxilla) के पीछे होते हैं।

(३) Proteroglypha जिनके विषदन्त ऊपरी जबड़े की हड्डी (Maxilla) के सामने होते हैं—यही विभाग है जो कि वास्तव में विषयुक्त सर्पों का समूह है और अभी तक जितने विषयुक्त सर्प Colubridæ Family के पाये गये और जिनके काटने से मनुष्यों की मृत्यु हो गई वे सब सर्प इसी समूह में से हैं।

सारे संसार में सर्प प्राय: १,८०० क़िस्म (Species) के पाये गये हैं जिसमें से केवल भारतवर्ष में ही १,५०० Species मिलते हैं। इनमें से केवल ६९ Species विषयुक्त हैं बाक़ी विषरहित हैं। इन ६९ Species में ४० Species तो पृथ्वी पर रहते हैं और बाक़ी २९ Species जल में वास करते हैं और जलनाग कहलाते हैं।

विषयुक्त सर्प नीचे दिये हुए परिशिष्ट के अनुसार पाँच भागों में विभक्त किये गये हैं, केवल एक Family Azimiopsfeæ है जो कि कोचिन पहाड़—बर्मा में केवल एक मिला था। यह सर्प देखने में प्राय: विषयुक्त के समान है परन्तु वास्तव में यह एक विषरहित सर्प है।

विषयुक्त सर्पों के पहिचानने के लिए परिशिष्ट

१—जलनाग:—पूँछ चपटी हो (चित्र नं० ४) तथा मस्तक भर में बड़े बड़े छिलके (Shields) हों—(चित्र नं० ५)

ये चिह्न जलनागों के लिए हैं जो समुद्र में वास करते हैं। २९ Species अभी तक पाये गये हैं।

२—करायत:—पूँछ गोल हो (चित्र नं० १) तथा पीठ के बीचवाली छिलकों (Scales) की सतर अन्यान्य छिलकों से बड़ी हों। (चित्र नं० ६)

इसके अतिरिक्त सिर में ४ इन्फ्रालेबियल शील्ड्स Infra-labial Shields हों जिसमें चौथी सबसे बड़ी हो। (चित्र नं० ७)

ये चिह्न नाना प्रकार के करायतों के लिए हैं—ये ११ प्रकार (Species) के होते हैं।

३—काला साँप या कोबरा (Cobra):—पूँछ गोल—तीसरा Supralabial नाक और आँख को छूता रहता है। (चित्र नं० ८)

ये चिह्न केउटिया, गोखुरा, काला साँप इत्यादि जिनको अँगरेज़ी में Cobras कहते हैं उनके होते हैं। ये ९ प्रकार के होते हैं।

४—पहाड़ी सर्प—(Pit Vipers) **पूँछ गोल**—आँख और नासारन्ध्र के बीच में एक छेद रहता है जिसको अँगरेज़ी में Loreal pit कहते हैं। (चित्र नं० ६)

ये Pit Vipers Crotalinæ family में आते हैं और इनकी १३ Species हैं।

चन्द्रबोड़ा इत्यादि—(Pitless Vipers) पूँछ गोल और सिर और पीठ दोनों पर छोटे छोटे छिलके Scales पाये

जाते हैं। कोई छिद्र नहीं पाया जाता। इसकी ६ Species हैं।

Group 1. सामुद्रिक सर्प (जलनाग)

पहिचान—पूँछें चपटी होती हैं जैसा कि (चित्र नं० ४) में दिखाया गया है। सिर से नासारन्ध्र तक बड़े बड़े छिलके पाये जाते हैं। (चित्र नं० ५)

सामुद्रिक सर्प जो कि Hydrophinæ family में हैं सर्वदा विषयुक्त होते हैं। Rogers रोजर्स साहब ने यह कहा है कि एक साधारण प्रकार के जलनाग में हमारे देश के गोखुरा या काला साँप (Cobra) के विष से आठगुना अधिक विष होता है। इन जलनागों के दंशन से बहुत-से लोगों की मृत्यु हुई है परन्तु इसके पकड़ने में असुबिधा होने के कारण इसके विषय में ठीक ठीक कुछ नहीं कहा जा सकता। इसके पहिचानने में भी कभी कभी कठिनता आ पड़ती है और अच्छी से अच्छी पुस्तकों में भी इसका वर्णन बहुत कम किया गया है।

Group 2. करायत सर्प

(Bungarus)

पहिचान—(१) पूँछ गोल (२) पीठ के बीचवाले छिलके (Scales) दूसरे छिलकों (Costals) से बड़े होते हैं। (३) केवल ४ Infralabial Shields होते हैं जिसमें चौथा सबमें बड़ा होता है—(चित्र नं० ७)।

करायत के पहिचानने के लिए सबसे पहले हमको यह जानना आवश्यक है कि पीठ के बीचवाले छिलके और छिलकों से बड़े हैं या नहीं। इसके बिना सर्प कभी करायत नहीं हो सकता। कभी कभी और भी विषरहित सर्पों के पीठ के छिलके बड़े होते हैं तथा इसी लिए और भी बहुत-सी विधियाँ हैं जिससे करायत की पहिचान हो सकती है। परन्तु ये विधियाँ साधारण मनुष्य की समझ में नहीं आ सकतीं इसी लिए मैं उनको इस जगह नहीं देना चाहता।

करायत प्रायः सर्व प्रकार के हमारे भारतवर्ष में पाये जाते हैं। इनमें से दो प्रकार के जिनको कि हिन्दी में करायत या चित्ती Bungarus cuarulus तथा राजसाँप Bungarus fasciatus कहते हैं भारतवर्ष में बहुत अधिक संख्या में पाये जाते हैं। इनमें से राजसाँप कुछ कम संख्या में मिलते हैं।

पीले सिर वाला करायत

Bungarus Flaviceps

पहिचान—केवल इसी प्रकार के करायत में छिलकों की १३ सतर (rows) होती हैं। मेरुदण्डवाले छिलके जितने चौड़े होते हैं उतने ही लम्बे होते हैं।

निवास—ये सर्प बहुत कम संख्या में मिलते हैं। मलाया पेनिन्सुला से तनासरिम तक तथा बर्मा प्रदेश में भी पाये जाते हैं।

लम्बाई—६ फ़ीट तथा उससे अधिक लम्बे भी होते हैं।

रंग—बोलेन्जर (Boulenger) साहब ने लिखा है पीठ तथा सिर काला होता है। इसके अतिरिक्त कभी कभी मेरुदण्ड के ऊपर पीली रेखा होती है। सिर लाल या पीला होता है। पूँछ तथा बदन का पिछला हिस्सा नारंगी रंग का होता है।

पूर्वीय पहाड़ी करायत

Bungarus Bungaroides

पहिचान—यही केवल एक करायत है जिसमें छिलकों की १५ सतरें होती हैं। पूँछ के छिलके दो भाग में विभक्त हो गये हैं। मेरुदण्डवाले छिलके जितने चौड़े होते हैं उतने ही लम्बे होते हैं। परन्तु पिछले हिस्से में वे अधिक चौड़े हैं।

निवास—ये अभी तक केवल हिमालय पहाड़ में, दार्जिलिङ्ग के आस-पास तथा आसाम में खासी पहाड़ियों में और उत्तरी कछार में पाये जाते हैं। विष के बारे में अधिक कुछ भी मालूम नहीं है।

लम्बाई—३ फ़ीट तक लम्बे होते हैं।

रंग—काला रंग होता है और साथ ही साथ सफ़ेद लकीरें भी पाई जाती हैं।

कुछ कम काला करायत

Bungarus Lividus

पहिचान—मेरुदण्डवाले छिलके कम चौड़े और अधिक लम्बे होते हैं।

निवास—बहुत कम मिलते हैं। लन्दन के म्यूज़ियम या अजायबघर में केवल चार सर्प हैं जिनमें से ३ आसाम से मिले थे और एक भारतवर्ष से। पूर्वीय हिमालय के पहाड़ों में अधिकतर इनका निवास माना जाता है। विष के बारे में वाल साहब (Wall) ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि लायड Leoyd साहब ने आसाम में अपनी ज़मींदारी से एक इसी प्रकार के सर्प को इनके पास पहचानने के लिए भेजा था। यह सर्प ३ फ़ीट २ इंच लम्बा था और इसने एक औरत को काटा था जिसकी मृत्यु थोड़े ही घण्टे के बाद हो गई।

लम्बाई—सबसे बड़ा जो कि Wall वाल साहब ने पाया है वह ३ फ़ीट ५ इंच था।

रंग—बिलकुल काला। पेट सफ़ेद।

राजसाँप

Bungarus Fasciatus

यह सर्प बंगाल तथा बर्मा में पाया जाता है और इसको बंगाल में राजसाँप या साँकिनी कहते हैं।

पहिचान—इस सर्प में काले और पीले पट्टे बदन भर में होते हैं। एक काला उसके बाद एक पीला पट्टा होता है। इस सर्प से मिलता हुआ एक दूसरा विषरहित सर्प होता है जिसको अँगरेज़ी में Lycodon Fasciatus कहते हैं और जो कि आसाम तथा बर्मा की पहाड़ियों में मिलता है। परन्तु यह लम्बाई में

छोटा होता है और इसकी पट्टियाँ बहुत अधिक संख्या में तथा मिली-जुली हुई होती हैं। इसके अतिरिक्त इसके छिलके करायत की तरह नहीं होते। मेरुदण्ड के छिलकों की सतर सबसे बड़ी होती है और छिलके लम्बाई से अधिक चौड़े होते हैं। इसकी पूँछ अँगुलियों की तरह होती है।

निवास—दक्षिणी चीन से लेकर तनासरिम होते हुए इरावदी तथा ब्रह्मपुत्र नदी के बेसिन तक और दक्षिण हिमालय तक पूर्व में महानदी के बेसिन तक तथा बेतिया में भी ये सर्प पाये,गये हैं।

विष—इसके विषय में दूसरे भाग में आलोचना की गई है।

लम्बाई—साधारणतः ६ फ़ीट। इसके अतिरिक्त मेजर स्मिथ Major Smith ने एक सात फ़ीट लम्बा सर्प भी पाया था।

बर्मी करायत

Bungarus Magnimaculatus

पहिचान—इसके पट्टे संख्या में कम होते हैं पर चौड़े होते हैं।

निवास—ये सर्प इरावदी नदी के बेसिन में बहुत थोड़ी-सी जगह में पाये जाते हैं। केवल यहा एक करायत है जो बर्मा-प्रदेश में अधिकतर पाये जाते हैं।

विष—इसके सम्बन्ध में कुछ मालूम नहीं।

लम्बाई—अभी तक ४ फ़ीट ३½ इंच तक पाये गये हैं।

रंग - काला—इसके साथ ११ से १४ हलके रंग के पट्टे भी होते हैं। ये पट्टे सफ़ेद होते हैं परन्तु साथ ही साथ इन पट्टों में काली रेखायें भी होती हैं। पेट बिलकुल सफ़ेद होता है।

अधिक पट्टेवाला करायत

Bungarus Multicinctus—The many banded krait

पहिचान—और सब करायतों से अधिक संख्या में इसके पट्टे होते हैं।

निवास—बर्मा प्रदेश में बहुत कम मिलते हैं। रंगून से एक मिला था—पुर्निया से दो पाये गये थे जो कि कलकत्ते के अजायबघर में हैं। अन्दमन, दक्षिणी चीन, हैनन तथा फारमोसा में मिलते हैं।

विष—इसके सम्बन्ध में कुछ नहीं मालूम है।

लम्बाई—३ फ़ीट ८ इंच सबसे बड़ा मिला है।

रंग—काला—३१ से ४८ तक सफ़ेद पट्टे बदन में और ११-१३ तक पूँछ में पाये जाते हैं। पेट सफ़ेद होता है।

बड़ा और काला आसामी करायत

Bungarus Niger

पहिचान—बिलकुल काला या स्याह रंग का होता है। इसके मेरुदण्ड के छिलके (Vertebrals) कुछ अधिक चौड़े होते हैं।

निवास—वाल साहब ने डिबरूगढ़ से सात सर्प पाये थे। एक सादिया (आसाम) से मिला था। ४ पूर्वीय हिमालय से मिले थे।

विष - अभी तक इसके बारे में कुछ मालूम नहीं।

लम्बाई—४ फ़ीट ½ इंच तक लम्बा पाया गया है।

रंग - ऊपर बिलकुल काला। पेट सफ़ेद लेकिन साथ ही साथ कुछ काले धब्बे भी पाये जाते हैं।

सीलोनी करायत या करावाला

Bungarus Ceylonicus

पहिचान—पट्टे पूरे होते हैं। सीलोन या लंका द्वीप में साधारणतः पाये जाते हैं।

निवास—लंका द्वीप।

विष—इसके विषय में यह मालूम है कि प्रायः ४ बजे प्रातःकाल के समय एक कुली को इस सर्प ने काटा। प्रायः ५–३० बजे से वह मनुष्य आलस्य में झूमने लगा। १० बजे के बाद उसको कुछ शराब पिलाई गई परन्तु वह पी न सका और क़ै करने लगा। दो बजे दोपहर को उसको बुख़ार आया और ४ बजे शाम को उसकी मृत्यु होगई।

यह रिपोर्ट डाक्टर ग्रीन साहब ने दी है और एक रिपोर्ट डाक्टर विली की है जिसमें इस सर्प ने एक मलाया की औरत को काटा था और १२ घंटे के अन्दर उस औरत की मृत्यु हुई।

लम्बाई—३ फ़ीट या इससे अधिक।

रंग—चमकता हुआ काला रंग—साथ ही इसके सफ़ेद पट्टियों की कैंची रहती है। पेट सफ़ेद परन्तु काले पट्टे भी मिलते हैं। बच्चों का सिर सफ़ेद होता है जिसमें काले नुक़ते भी होते हैं।

कौड़ियाँ या चित्ती

Bungarus Caeruleus

बंगाल में इस सर्प को करायत या चित्ती कहत हैं। मालावार में इसको वाल्लापाम्बो कहते हैं। मद्रास में अनाली कहते हैं। पंजाब तथा संयुक्तप्रान्त में इसको काेड़िया या चितकौड़िया कहते हैं। और भी इसको कई नामों से पुकारते हैं।

पहिचान—इसकी सफ़ेद कौड़ियाँ और छिलकों की १५ सतरों से हम इसको बहुत सरलता से पहचान सकते हैं। इसके पूँछ की कौड़ियाँ सर्वदा दर्शनीय रहती हैं यद्यपि सिर के तरफ़वाली नष्ट हो जाती हैं।

निवास ये सर्प पंजाब, संयुक्तप्रान्त, बंगाल, बिहार इत्यादि सारे भारतवर्ष में पाये जाते हैं। लंका में बहुत कम पाये जात हैं।

विष—इसके विषय में दूसरे भाग में आलोचना की गई है।

लम्बाई—४ फ़ीट से अधिक लम्बे नहीं पाये जाते।

रंग—काला रंग होता है जिसमें सफ़ेद कौड़ियाँ पाई जाती हैं।

सिन्धी करायत

Bungarus Sindanus

इसको पीयुन कहते हैं।

पहिचान—पीठ में छिलकों की १७ सतरें होती हैं। पहली तीन सुपरा लेबियल्स (Supralabials) बहुत अधिक चौड़ी होती हैं।

निवास—राजपूताना, सिन्ध, बलूचिस्तान, पंजाब।

विष—इसके विषय में कुछ अधिक मालूम नहीं।

लम्बाई—६ फ़ीट तक लम्बे होते हैं।

रंग—काला होता है। साथ ही इसके शरीर में भी कौड़िया सर्प की तरह सफ़ेद लकीरें पाई जाती हैं।

वाल साहब का करायत

Bungarus Walli

पहिचान—छिलकों की १७ या १९ सतरें मौजूद हैं। मेरुदंड के छिलके जितने लम्बे उतने ही या उससे अधिक चौड़े होते हैं।

निवास—फैज़ाबाद, गया, मिदनापुर, पुर्निया।

लम्बाई—४ फ़ीट ११$\frac{3}{4}$ इंच तक पाये गये हैं।

रंग—पारे की तरह। सफ़ेद पट्टे भी होते हैं और कुछ गोल धब्बे भी पाये जाते हैं।

गोखुरा, केउटिया तथा प्रवाल सर्प

Group 3. Cobras and Coral Snakes

पहिचान—(१) पूँछ गोल होती है। (२) तीसरा Supra-labial Shield नासारन्ध्र तथा आँख को स्पर्श करता है। (चित्र ८) (३) गोखुरा तथा केउटिया सर्प के फना होता है।

सफ़ेद धारीवाला प्रवाल सर्प

Doliophis Bivirgatus

The White Striped Coral Snake

पहिचान—ये सर्प तथा इसके बादवाले सर्प में केवल ६ Supralabial होते हैं और इसके पूँछवाले छिलके पूरी संख्या में रहते हैं। इन चिह्नों से हम इन दो सर्पों को और सर्पों से पृथक् कर सकते हैं। (चित्र नं० १०)

निवास—यह सर्प मलाया से बर्मा तक पाया जाता है परन्तु बर्मा में कम मिलता है।

विष—इसके विषय में अधिक कुछ मालूम नहीं परन्तु इस सर्प में तथा नीचे दिये हुए दूसरे सर्प में भी विष की पोटली हृदय (Heart) के पास रहती है।

लम्बाई—५ फ़ीट तक पाये जाते हैं।

रंग—पीठ पर काला रंग होता है। इसके उपरान्त इसमें २-४ सफ़ेद रेखायें भी पाई जाती हैं। सिर और पूँछ लाल होते हैं। पेट भी गुलाबी रंग का होता है।

पट्टेवाला प्रवाल सर्प

Doliophis Intestinalis

पहिचान—ऊपर दिये सर्प की तरह इसमें भी ६ सुपरा लेबियल छिलके (Supralabials) होते हैं लेकिन पेट में काले रंग के पट्टे दिखलाई पड़ते हैं।

निवास—मलाया में अधिक संख्या में मिलते हैं परन्तु बर्मा में भी पाये जाते हैं।

विष—इसके सम्बन्ध में अधिक कुछ मालूम नहीं।

लम्बाई २ फ़ीट।

रंग—रंग के विषय में बोलेन्जर Boulenger साहब ने कहा है कि पीठ भूरे या काले रंग की होती है जिसमें कुछ गहरे रंग की छींटें पाई जाती हैं। पूँछ गुलाबी या लाल होती है। पेट भी मोतिया रंग का होता है।

नाग—(गोखुरा या केउटिया)

Cobra

इस सर्प को संयुक्तप्रान्त में काला साँप या नाग कहते हैं। बंगाल में इस सर्प को गोखुरा या केउटिया कहते हैं। प्रयाग में केवल गोखुरा ही मिलता है और इसको साँपवाले मदारी नाग या नागिन के नाम से पुकारते हैं। मद्रास में तामिल भाषा में इसको नल्ला पाम्बो कहते हैं तथा मैसूर में इसको नागराहवू कहते हैं।

पहिचान—साधारणतः इस सर्प को इसके फना से पहिचान लेते हैं। इसके अतिरिक्त इसके फने के ऊपर चक्र अंकित रहता है। जिसमें एक चक्र होता है उसको केउटिया कहते हैं और जिसमें दो होते हैं उसको गोखुरा कहते हैं।

मृत्यु के पश्चात् इसका फना नहीं रहता है और इसका पहिचानना भी कठिन हो जाता है। बहुधा मृत्यु के पश्चात् लोग एक विषरहित सर्प को ग़लती से विषयुक्त नाग समझते हैं कारण विषरहित सर्प की गर्दन के पास की झिल्ली को नाग का फना समझते हैं।

नाग के पहिचानने के लिए नीचे दी हुई विधियाँ बहुत लाभदायक हैं।

१—प्रीओकुलर (Præocular) छिलका (Shield) इन्टर-नेसल छिलके (Internal Shield) को छूता है। (चित्र नं० ११)

२—चौथे और पाँचवें इन्फ्रा लेबियल छिलकों के बीच में एक छोटा-सा छिलका होता है जिसको किउनियेट (Cuneate) कहते हैं।

३—इसकी पीठ के छिलके ब्राकेट की तरह सजे हुए होते हैं। (चित्र नं० १२)

निवास—सारे भारतवर्ष में ये सर्प पाये जाते हैं। इनका रंग एक-सा नहीं होता।

विष—यह सर्प अपने विषदन्त से किसी मनुष्य अथवा जानवर को काट ले तो उसकी मृत्यु अवश्य हो जाय।

लम्बाई—६ फ़ीट साधारणतः। सबसे बड़ा जो पाया गया है वह ६ फ़ीट ७ इंच लम्बा था।

रंग—भूरा, काला इत्यादि।

शंकरचूड़

The Hamadryad or King Cobra
Naia Bungarus

इस सर्प को बंगाल में शंकरचूड़ कहते हैं। यह सर्प बहुत लम्बा तथा भयानक होता है। यह बड़े बड़े जंगलों में वास करता है और यह दूसरे जानवरों के अतिरिक्त सर्पों का भक्षक है। इसी लिए इसको सर्पों का राजा कहते हैं।

पहिचान—पराइटल (Parietal) के पीछे दो बड़े बड़े छिलकों का एक जोड़ा है जो किसी भी दूसरे सर्प में नहीं मिलता। (चित्र नं० १३)

निवास—लंका द्वीप, पश्चिमी राजपूताना, सिन्ध तथा पञ्जाब के सिवाय यह सर्प सारे भारतवर्ष में मिलता है। यह बड़े बड़े जंगलों में मिलता है और पहाड़ों में भी दिखलाई पड़ता है।

लम्बाई—१५ फ़ीट ५ इंच तक का मिला है।

रंग—बच्चे बिलकुल काले होते हैं और साथ ही इसके सफ़ेद या पीली धारियाँ भी होती हैं। बड़े होने पर पीला, हरा, भूरा, मटमैला या काला सब प्रकार के मिलते हैं। गर्दन प्रायः पीले रंग की होती है।

बिबरन साहब का प्रवाल सर्प

Callophis Bibroni

पहिचान—प्रीफ्रान्टल छिलका Praefrontal Shield सर्वदा तीसरे सुपरालेबियल को स्पर्श करता है। यह बात और किसी सर्प में नहीं मिलती। (चित्र नं० १४)

निवास—भारतवर्ष के पश्चिमी घाट में कभी कभी मिल जाता है।

विष—इसके विषय में अधिक कुछ मालूम नहीं।

लम्बाई—२ फ़ीट या अधिक।

रंग—मोतिया। पीठ में कुछ भूरापन दिखलाई देता है। पेट गुलाबी, सिर का अग्रभाग काले रंग का होता है।

मेकलेलेण्ड साहब का प्रवाल सर्प

Callophis Macclellandi

पहिचान—पूँछ के छिलके (Shield) दो भागों में विभक्त हैं। केवल ७ सुपरालेबियल हैं। एक टेम्पोरल है जो कि पाँचवें और छठे सुपरालेबियल को स्पर्श करता है।

निवास—हिमालय में कसौली तक, नेपाल, सिकिम, आसाम, बर्मा, दक्षिणी चीन तथा फारमोसा। शिलांग के पास खासी पहाड़ियों में अधिक पाये जाते हैं।

विष—इसके सम्बन्ध में अधिक नहीं मालूम।

लम्बाई—२ फीट ७½ इंच तक पाये गये हैं।

रंग—चार प्रकार के होते हैं।

१—पीठ बिलकुल लाल १६-१७ काले पट्टे या चूड़ियाँ भी मिलती हैं। पेट पीला।

२—लाल—२३,२४ काली चूड़ियाँ। एक काली धारी मेरुदण्ड के ऊपर चली गई है।

३—काली चूड़ियाँ की अनुपस्थिति। मेरुदण्ड की काली धार भी नहीं है—पेट पीला परन्तु काले धब्बे भी पाये जाते हैं।

४—केवल एक कसौली में अभी तक मिला है। काली चूड़ियाँ नहीं हैं। परन्तु एक चौड़ी काली रेखा पीठ के बीचोंबीच चली गई है।

ऊपर दिये हुए चारों प्रकार के सर्प के सिर काले होते हैं और चौथे प्रकार में एक दूधिया पट्टा भी उपस्थित है।

पतला प्रवाल सर्प

Callophis Trimaculatus. The slender coral snake

पहिचान—पूँछ के छिलके (Shield) दो भागों में विभक्त हैं तथा इसमें ६ सुपरालेबियल हैं।

निवास—लंका द्वीप, दक्षिणी भारतवर्ष, दक्कन, कनाड़ा, बंगाल तथा बर्मा-प्रदेश में पाये जाते हैं।

विष—इसके विषय में कुछ अधिक मालूम नहीं।

लम्बाई—बहुत पतला होता है। १३ "इंच तक पाया जाता है।

रंग—हलका पीला रंग। सिर और पूँछ का काला होता है। पूँछ में दो काले पट्टे होते हैं—पेट मोतिये रंग का होता है।

छोटी बूँट वाला प्रवाल सर्प

Callophis Maculiceps

पहिचान—पूँछ के छिलके दो भागों में विभक्त रहते हैं और टेम्पोरल (Temporal) पाँचवें, छठे तथा सातवें सुपरालेबियल को स्पर्श करता है।

निवास—केवल बर्मा-प्रदेश में मिलते हैं परन्तु बहुत कम।

विष—कुछ मालूम नहीं।

लम्बाई—१½ फीट तक पाये जाते हैं—

रंग—मस्तक तथा गर्दन काले रंग का होता है। बदन पीला या भूरा होता है। पूँछ में दो काले पट्टे होते हैं। पेट मोतिये रंग का होता है, पूँछ काली होती है।

भारतवर्षीय प्रवाल सर्प

Hemibungarus Nigrescens

पहिचान—यह ऊपर दिये हुए सर्प की तरह होता है पर इसका निवासस्थान भिन्न होने के कारण हम इसको पृथक् कर सकते हैं।

निवास—पश्चिमी हिन्द की पहाड़ियों में, जैसे नीलगिरी पहाड़।

विष—कुछ मालूम नहीं।

रंग—सिर और गर्दन काले रंग का होता है। पीठ लाल या कुछ भूरापन लिये हुए होता है। पेट बिलकुल लाल रंग का होता है।

पहाड़ी सर्प

Group 4. The pit-vipers (Crotalinæ)

पहिचान—(१) पूँछ गोल, (२) नासारन्ध्र तथा नेत्रों के बीच में एक छेद है जिसको अँगरेज़ी में Loreal pit लोरियल पिट कहते हैं (चित्र ९)।

इस छेद से प्रायः सब पहाड़ी सर्प पहिचान लिये जा सकते हैं। इसके बड़े बड़े विषदन्त होते हैं परन्तु इसके दंशन से बहुत कम मनुष्यों की मृत्यु हुई है। काटने के बाद वह जगह फूल जाती है और एक दो सप्ताह के बाद बिलकुल ठीक हो जाती है।

ये सर्प पहाड़ों में ही अधिकतर रहते हैं।

पहाड़ी वाईपर

Ancistrodon Himalayanus

पहिचान—सिर के सामनेवाले छिलके बड़े होते हैं तथा बदन पर छिलकों की २१-२३ सतरें मौजूद हैं।

निवास—हिमालय पर्वत में, खासी पहाड़ियों में, काश्मीर, चित्रल इत्यादि जगहों में बहुत अधिक संख्या में पाये जाते हैं।

लम्बाई—२ फ़ीट १० इंच तक के पाये गये हैं।

रंग—भूरा और साथ ही इसके बहुत-से रंग मिले हुए होते हैं। पेट सफ़ेद होता है जिसमें काले और लाल छींटें पाई जाती हैं।

ऊँची नाकवाला वाइपर

Ancistrodon Hypnale

पहिचान—ऊपरी सर्प की तरह इसके भी सिर के सामने-वाले छिलके बड़े होते हैं परन्तु पीठ पर १७ सतरें छिलकों की होती हैं।

निवास—लंका द्वीप की पहाड़ियों में पाये जाते हैं। और कहीं ये सर्प नहीं पाये जाते।

विष—विष के विषय में गन्थर साहब ने यह लिखा है कि इसके काटने से मृत्यु की सम्भावना बहुत कम है। डाक्टर हे (Dr. Drummond Hay) साहब ने वाल (Wall) साहब को लिखा कि दो कुली औरतों को इस साँप ने काटा। एक को घुटने में काटा जिससे कि उस औरत को कुछ भी न हुआ। दूसरे को हाथ में काटा जिससे वह बेहोश हो गई लेकिन दूसरे दिन वह अच्छी हो गई। ऐसे और भी मनुष्यों को इस सर्प ने काटा परन्तु इसके काटने का असर कुछ भी न हुआ।

लम्बाई—१८ इंच तक लम्बा होता है।

रंग—भूरा होता है लेकिन बड़े बड़े काले काले धब्बे पीठ भर में दिखलाई देते हैं।

मिलार्ड साहब का वाईपर

Ancistrodon Millardi

पहिचान—सिर के ऊपर के छिलके बड़े होते हैं। बदन में १७ छिलके होते हैं। सुपराश्रोकुलर Supraocular फ्रान्टल Frontal से चौड़े होते हैं। नाक की उँचाई उतनी नहीं होती जितनी पिछलेवाले साँप की थी।

निवास—भारतवर्ष के पश्चिमी घाटों की पहाड़ियों में, तथा लंका द्वीप में पाये जाते हैं।

विष—इसके विषय में अभी तक कुछ मालूम नहीं।

लम्बाई—एक फ़ुट या कुछ अधिक।

रंग—भूरा होता है जिसमें और भी बहुत-से रंग मिले हुए होते हैं। काले धब्बे भी होते हैं।

बड़े छिलकेवाला वाईपर

पहिचान—बदन के आख़िरी छिलकों की सतर और अन्यान्य छिलकों से छोटी होती है। इससे इस सर्प को आसानी से पहिचान सकते हैं।

निवास—दक्षिणी भारतवर्ष के पलने, शेवराय तथा अनामलया पहाड़ियों में रहते हैं।

विष—इसके विष से मृत्यु कदाचित् नहीं होती।

लम्बाई—२ फ़ीट लम्बे होते हैं।

रंग—ऊपर बिलकुल हरा—एक सफ़ेद या पीली रेखा भी उपस्थित है। मेरुदण्ड के ऊपर कुछ काले धब्बे दिखलाई देते हैं और पूँछ में काली अँगूठियाँ भी दिखलाई देती हैं।

Lachesis Strigatus. The Horse Shoe-viper

पहिचान—केवल इसी सर्प में दूसरा लेबियल छिलका (Shield) लोरियल पिट से अलग है।

निवास—पश्चिमी घाट, नीलगिरी, अनामल्लया शवराय तथा पलने पहाड़ियों में पाये जाते हैं। ३,००० से ८,००० फ़ीट ऊँचाई पर मिलते हैं। ऊटी पहाड़ में भी दिखलाई देते हैं।

विष—विष में मृत्यु की सम्भावना नहीं की जा सकती।

लम्बाई—१½ फ़ीट तक पाये जाते हैं।

रंग—भूरा होता है और साथ ही इसमें कुछ काले धब्बे भी पाये जाते हैं। कुछ पीले रंग का एक घोड़े की नाल की तरह का चिह्न-सा रहता है। नेत्रों के पीछे एक काली रेखा रहती है।

बड़ी बूटीवाला वाईपर

Lachesis Monticola

पहिचान—केवल यही एक सर्प है जिसमें सब औकुलर छिलका (Subocular Shield) नहीं रहता। सिर पर २३ छिलके होते हैं। बदन पर २३ तथा पूँछ में १९ छिलके होते हैं।

निवास—हिमालय के पहाड़ों में ८,००० फ़ीट ऊँचाई तक पाये जाते हैं। आसाम, बर्मा तथा यूनान की पहाड़ियों में भी मिलते हैं।

विष—इसके विषय में दूसरे भाग में वर्णन किया गया है।

लम्बाई—३ फ़ीट तक लम्बे होते हैं।

रंग—भूरे या बादामी रंग का होता है तथा पीठ पर काली बूटियाँ भी मिलती हैं। Crown dark-brown with a buff V-bordered dark-brown below. पेट पीले रंग का होता है।

केन्टर साहब का वाईपर

Lachesis Cantoris

पहिचान—बदन के बीच के हिस्से में २९ छिलके होते हैं।

निवास—अन्दमन तथा नीकोबार द्वीप में पाये जाते हैं।

विष—इसके विष की पोटली बहुत छोटी होती है तथा यह मालूम किया गया है कि इसके काटने से मृत्यु होने की सम्भावना नहीं होती।

लम्बाई—३-४ फ़ीट।

रंग—ये दो प्रकार के होते हैं। एक हरे रंग का होता है जिसमें पाँच हरे रंग की लकीरें बदन भर में पाई जाती हैं। दूसरा प्रायः बादामी रंग का होता है जिसमें काली बूटियाँ पाई जाती हैं। सिर पर प्रायः एक पीली लकीर होती है। पेट सफ़ेद या हरा होता है।

ग्रे साहब का वाईपर

Lachesis Purpureomaculatus. Gray's Viper

पहिचान—बदन के पिछले हिस्से में १९ छिलके होते हैं।

निवास—बंगाल, आसाम, बर्मा, अन्दमन तथा नीकोबार द्वीप में।

विष—प्रायः मृत्यु की सम्भावना नहीं रहती।

लम्बाई—४ फ़ीट तक पाये जाते हैं।

रंग—तीन प्रकार के होते हैं। (१) बिलकुल हरा, (२) लाल और भूरा रंग मिला हुआ, (३) लाल, भूरा तथा हरा तीनों रंग मिले हुए होते हैं।

फारमोसा का वाईपर

Lachesis Mucrosquamatus

पहिचान—बदन के पिछले हिस्से में २१ छिलके, नाकवाला (Nasal) छिलका प्रथम लेबियल (Labial) से अलग रहता है तथा एक सबऔकुलर (Subocular) भी मौजूद रहता है। इन तीनों पहिचान के रहने से इस सर्प के पहिचानने में कोई कठिनता नहीं रहती।

निवास—नागा पहाड़, आसाम तथा फ़ारमोसा।

विष—इसके विषय में कुछ मालूम नहीं।

लम्बाई—३½ फ़ीट।

रंग—भूरा होता है और काले रंग की बूटियाँ बदन भर में रहती हैं।

जरडन साहब का वाईपर

Lachesis Jerdoni

पहिचान—सबऑकुलर (Subocular) छिलका तीसरे लेबियल (Labial) छिलके को छूता हुआ रहता है। सात या आठ सुपरालेबियल (Supralabial) रहते हैं।

निवास—खासी पहाड़ियाँ, आसाम तथा तिब्बत में पाये जाते हैं।

विष—इसके विषय में कुछ अधिक मालूम नहीं।

लम्बाई—२½ फीट।

रंग—हरा तथा काला मिला हुआ। सिर काला होता है जिसमें पीला रंग भी मिलता है।

कन्दसार सर्प

Lachesis Gramineus

इस सर्प को बंगाल में गेचो, बोड़ा, पात, अलाद इत्यादि कहते हैं। बिहार में इसको पातवा, कन्दसार इत्यादि कहते हैं। लंका में पलाबरिया कहते हैं।

यह हरे रंग का होता है तथा प्रायः बाँस के पेड़ों में रहता है।

निवास—यही सर्प सबसे अधिक संख्या में भारतवर्ष में पाया जाता है। बर्मा, मलाया, अन्दमन, नीकोबार तथा दक्षिणी भारतवर्ष में प्रायः मिलता है। कलकत्ते के पूरब में मैदानों में भी पाया जाता है।

विष—इसका विष मृत्युकारक नहीं होता।

लम्बाई—३½ फ़ीट।

रंग—हरे रंग का होता है।

सीलोनी पोलंगा

Lachesis Trigonocephalus

पहिचान—सुपरा औकुलर (Supraocular) छिलका दो भागों में विभक्त रहता है और सबऔकुलर (Subocular) छिलका तीसरे लेबियल (Labial) छिलके से सटा रहता है।

निवास—केवल सीलोन या लंकाद्वीप में प्रायः पहाड़ियों के अन्दर मिलते हैं।

विष—इसके अतिरिक्त यह मालूम किया गया है कि एक समय इस सर्प ने किसी मनुष्य को काटा। इसका फल यह हुआ कि वह हाथ जिसमें काटा था वह फूल गया लेकिन दूसरे दिन फिर ठीक हो गया अर्थात् इसका विष मृत्युकारक नहीं होता।

लम्बाई—२½ फ़ीट का होता है।

रंग—पत्ते के समान हरा होता है जिसमें काली बूटियाँ भी होती हैं। आँखों के सामने एक काली लकीर होती है।

Lachesis Anamallensis

पहिचान—इसमें भी सुपरा औकुलर भागों में विभक्त रहता है परन्तु इसमें सबऔकुलर तीसरे लेबियल से अलग रहता है।

निवास—कृष्णा नदी के दक्षिण-पश्चिमी घाट में नील पहाड़ियों में पाये जाते हैं।

विष—यह विषयुक्त सर्प नहीं होता।

लम्बाई—३½ फ़ीट लम्बा होता है।

रंग—हरा और काला दोनों मिला रहता है।

× × ×

छिद्ररहित वाईपर

Pitless Vipers

इनमें से (१) अफ़ाई या बंकोराज (Echis Carinata) और (२) कोरईल या चंद्रबोड़ा (Russell's Viper) हमारे भारतवर्ष में अधिक संख्या में मिलते हैं।

पहिचान—(१) पूँछ गोल होती है। (२) सिर के छिलके बहुत छोटे होते हैं। (३) कोई छिद्र नहीं पाया जाता।

Russell's Viper

बंगाल में इसको बहुत नामों से पुकारते हैं। चंद्रबोड़ा, चित्तीबोड़ा, चक्रबोड़ा, जेसुर, शेखरचन्दा, शंखपाटी इत्यादि। सिन्ध में इसको कोरईल कहते हैं। बर्मा में मी-बी (Mwe-Bwe), मैसूर में कोलाकु मण्डला। मद्रास में कनद्रिविरियाँ, गुजरात में चितार इत्यादि कहते हैं। (चित्र नं० १५)

पहिचान—इसके सारे बदन में काली बूटियाँ पाई जाती हैं।

निवास—सारे भारतवर्ष में पाये जाते हैं परन्तु लंकाद्वीप

५४६

में अधिक संख्या में मिलते हैं। हमारे संयुक्तप्रान्त में प्रायः नहीं दिखाई देते लेकिन पंजाब में ये काफ़ी तायदाद में पाये गये हैं।

विष—प्रायः इसके काटने से मनुष्य बचते नहीं।

लम्बाई—प्रायः पाँच फ़ीट लम्बा होता है।

रंग—मटमैला होता है और सारे बदन में काली चूड़ियाँ अथवा बूटियाँ (Rings) रहती हैं। पेट सफ़ेद रंग का होता है। यह सर्प बहुत जोर के साथ फुफकारता है और मनुष्य की परवाह नहीं करता।

अफ़ाई या बंकराज

Echis Carinata

बंगाल में इस सर्प को बंकोराज कहते हैं, क्योंकि यह कभी सीधा नहीं रहता। दिल्ली में इसे अफ़ाई कहते हैं, पंजाब में फिस्सी, मदरास में कतुविरियाँ इत्यादि कहते हैं।

पहिचान—इस सर्प का हर एक छिलका आरी के दाँत की तरह होता है और इन छिलकों की रगड़ से यह एक विचित्र शब्द करता है। (चित्र नं० १६)

निवास—यह सर्प भारतवर्ष की रेतीली जगहों में अधिक पाया जाता है। बंगाल में मिलता है लेकिन कम संख्या में। दक्षिणी हिन्द में रत्नागिरी में बहुत अधिक संख्या में पाया जाता है।

विष—इसके विष से मृत्यु निश्चय होती है।

लम्बाई—प्रायः २ फ़ीट लम्बा होता है।

रंग—भूरा या राख (grey) के रंग का होता है और इसके सिर पर एक काला त्रिकोण अंकित रहता है। पेट सफ़ेद होता है या कुछ बूटियाँ भी होती हैं।